प्रश्न- 19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण का संबंध आधुनिकता अथवा आधुनिक राष्ट्रवाद से जोड़ा जाता है।'' इस कथन का विश्लेषण कीजिए। (200 शब्द)

The Indian Renaissance of 19th Century is associated with moderity or modern national ism. Analyse this statement. (200 Words)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- विद्वानों द्वारा 19वीं सदी के समाज एवं धर्म सुधार आंदोलन को भारतीय पुनर्जागरण की संज्ञा दी गई है। एक तरफ इस नवीन चेतना को जागृत करने में पाश्चात्य तत्वों की बड़ी भूमिका रही, तो दूसरी ओर इस नवीन चेतना ने पाश्चात्य विरासत को ही चुनौती दे डाली। पाश्चात्य प्रभाव के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, फिर भी हम इस पूरी प्रक्रिया को औपनिवेशिक कृपामात्र नहीं मान सकते।

मुख्य विषय वस्तु

आधुनिकता व आधुनिक राष्ट्रवाद के तत्वों पर गौर करते हुए उसके तत्वों को 19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण में देखते हुए दोनों में संबंध तलाशना होगा। जिसमें आप निम्न बिंदुओं पर विचार कर सकते हैं-

- अंग्रेजों की भारत विजय ने भारतीय समाज की कमजोरियों को उजागर किया। ऐसे में कुछ प्रबुद्ध विचारकों ने अपनी पराजय व कमियों की खोज-बीन शुरू की। विचारकों पर पश्चिम के 'वैज्ञानिकवाद', 'बुद्धिवाद', 'मानवतावाद', 'स्वतंत्रता', 'समानता', तथा 'नारी मुक्ति' आदि सकारात्मक तथ्यों का प्रभाव रहा।
- 19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण में बौद्धिक स्तर पर भारतीय आस्था एवं दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया और धर्म एवं समाज के क्षेत्र में सुधार का युग शुरू हो गया।
- 'नारी मुक्ति' में सती-प्रथा, शिशु हत्या, विधवा तथा बाल विवाह इत्यादि की समस्याएँ, जातिवाद, छूआछूत, धर्म में मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, धार्मिक अंधविश्वास आदि को तर्क व बुद्धिवाद के चश्में से देखा गया व सुधार के प्रयास हुए, जिसमें कानून द्वारा, आंतरिक सुधार तथा प्रतीकात्मक सुधार के प्रयास हुए।
- उल्लेखनीय है कि 19वीं सदी के पुनर्जागरण में पाश्चात्य व देशी तत्वों के बीच सुंदर सामंजस्य दिखता है। पश्चिमी प्रेरणा और देशी तत्वों का संबल, दोनों सुधारकों को प्राप्त हुआ। राजा राम मोहन राय, दयानंद, बंकिमचंद्र चटर्जी व विवेकानंद जैसे सुधारकों ने भारतीय सामाजिक आंतरिक विभाजन को पाटने का प्रयास किया।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।